फाइब्रॉइड के लक्षण (Symptoms of Fibroid)

गर्भाशय में फाइब्रॉइड के लक्षण (Symptoms of Fibroid in Uterus)

डॉ0 राजीव सिंह एवं मुकेश शर्मा

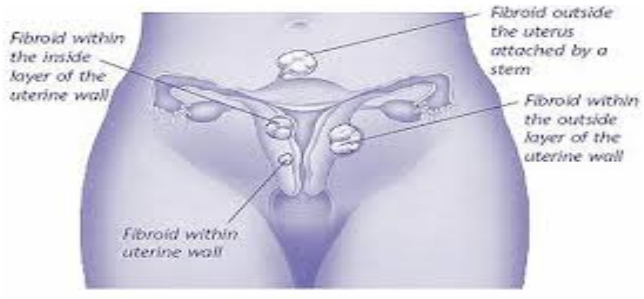

- मासिक धर्म के दौरान या बीच-बीच में अधिक रक्तस्राव, थक्के सहित।
- नाभि के नीचे स्थित पेट में दर्द या कमर के निचले हिस्से में दर्द।
- अक्सर पेशाब आने की समस्या।
- मासिक धर्म के दौरान दर्द की लहरें।
- यौन संबंध स्थापित करते समय दर्द।
- मासिक धर्म का सामान्य से लंबे समय तक चलना।
- 35 साल की आयु तक माँ नही बन पाना।

Synopsis

फायब्रॉइड्स गर्भाशय में बनने वाले ट्यूमर्स हैं, जो आमतौर पर आनुवंशिक और गाँठें नॉन कैंसर्स होती हैं। यह हार्मोनल बदलावों के कारण भी हो सकते हैं। फायब्रॉइड्स के कारण, लक्षण और उपचार के बारें में पूरी जानकारी-

कैसे होती है गर्भावस्था के दौरान बच्चेदानी में गांठ? Know about Uterus Fibroid

फायब्रॉइड्स गर्भाशय में बनने वाले ट्यूमर्स हैं। यह गाँठें आमतौर पर नॉन कैंसर्स होती हैं और केवल 10 हजार में से फायब्रॉयड के किसी एक ही मामले में कैंसर का खतरा होता है। ये गांठें अधिकतर 25-40 की आयु के बीच में होती हैं। जिन स्त्रियों में एस्ट्रोजन का लेवल अधिक होता है, उनमें फायब्रॉइड यूट्रस और कैंसर दोनों का खतरा ज़्यादा होता है।

फायब्रॉइड क्यों होते हैं (बच्चेदानी में गांठ कैसे बनती है), इसका कारण अब तक पता नहीं चल सका है। आमतौर पर ये आनुवंशिक होते हैं। माना जाता है कि हर पांच में से एक स्त्री के यूट्रस में गांठ के लक्षण दिखते हैं। ओवरवेट या ओबेसिटी से ग्रस्त स्त्रियां इनकी चपेट में अधिक आती हैं। हार्मोनल बदलावों के कारण भी ये हो सकते हैं। इनका खतरा फायब्रॉइड्स के आकार व स्थिति पर निर्भर करता है। फाइब्रॉइड जिसे आम भाषा में Bachedani Me Ganth या गर्भाशय में रसौली भी कहते हैं।

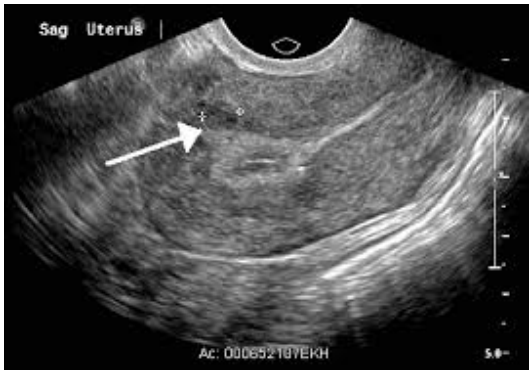

ये ऐसी गांठें होती हैं जो कि महिलाओं के गर्भाशय में या उसके आसपास उभरती हैं। ये मांस-पेशियां और फाइब्रस उत्तकों से बनती हैं और

इनका आकार कुछ भी हो सकता है, जो मटर के दानें के आकार से लेकर तरबूज के आकार तक की हो सकती हैं। इसके कारण बांझपन का खतरा होने की आशंका रहती है। तो आइये जानते है क्या होते है बच्चेदानी में गांठ के कारण, लक्षण और उपचार?

बच्चेदानी में गांठ होने के कारण कुछ इस प्रकार हैं-

गर्भाशय में रसौली अर्थात् गर्भाशय फाइब्रॉइड की समस्या, आनुवांशिक भी हो सकती है। अगर परिवार में किसी महिला को ये बीमारी पहले से हो चुकी है तो ये पीढ़ी दर पीढ़ी आगे भी बढ़ सकती है। या फिर ये हार्मोन के स्त्राव में आए उतार-चढ़ाव के कारण से भी हो सकता है। बढ़ती उम्र, प्रेग्नेंसी और मोटापा भी इसका एक कारण हो सकते हैं। फाइब्रॉइड बीमारी से डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि 99 फीसदी ये बीमारी बिना कैंसर वाली होती है।

बच्चेदानी में गांठ के लक्षण कुछ इस से प्रकार हैं-

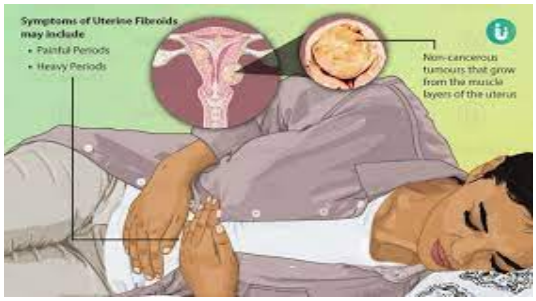

- माहवारी के समय या बीच में ज्यादा रक्तस्राव, जिसमे थक्के शामिल हैं।

- नाभि के नीचे पेट में दर्द या पीठ के निचले हिस्से में दर्द।
- बार-बार पेशाब आना।
- मासिक धर्म के समय दर्द की लहर चलना।
- यौन सम्बन्ध बनाते समय दर्द होना।
- मासिक धर्म का सामान्य से अधिक दिनों तक चलना।
- नाभि के नीचे पेट में दबाव या भारीपन महसूस होना।
- प्राइवेट पार्ट से खून आना।
- कमजोरी महसूस होना।
- पेट में सूजन होना।
- एनीमिया की शिकायत होना।
- निरंतर कब्ज बने रहना।
- पैरों में दर्द।
- 33 या 35 वर्ष की आयु तक माँ नही बन पाना।

अगर गर्भाशय फाइब्रॉइड का आकार बड़ा हो चुका है तो डॉक्टर्स इसका इलाज या तो दवाइयां दे कर करते हैं या फिर दूरबीन वाली (Hysteroscopy/Laparoscopy) के सर्जरी द्वारा।

गर्भावस्था (प्रेग्नेंसी) के दौरान बच्चेदानी में गांठ विकसित होना-

भले ही यूट्रस में कोई फायब्रॉइड छोटा सा हो, लेकिन प्रेग्नेंसी के दौरान वह भी गर्भ की तरह ही बढने लगता है। शुरुआती महीनों में इसकी ग्रोथ ज्यादा तेजी से होती है। इसमें बहुत दर्द और ब्लीडिंग होती है, कई बार अस्पताल में भर्ती होना पड सकता है। लेकिन आज के समय में डॉक्टर, यूट्रस के भीतर तक देख कर यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि फायब्रॉइड विकसित होते भ्रूण की जगह न ले सकें।

अल्ट्रासाउंड के जरिये भ्रूण और फायब्रॉयड्स के विकास की पूरी प्रक्रिया को देखा जा सकता है। कई बार फायब्रॉयड्स सर्विक्स की साइड में या लोअर साइड में हों तो इनसे बर्थ कैनाल ब्लॉक हो जाती है और नॉर्मल डिलिवरी नहीं हो सकती, तब सी-सेक्शन करना पडता है।

बच्चेदानी में गांठ (यूट्रस में गांठ) का इलाज-

गर्भाशय फाइब्रॉइड का इलाज इस बात पर निर्भर करता है कि आपके अंदर किस प्रकार के लक्षण नजर आ रहे हैं। अगर आपको फाइब्रॉइड है, लेकिन कोई लक्षण नजर नहीं आ रहे हैं, तो इलाज की जरूरत नहीं होती। फिर भी डॉक्टर से नियमित रूप से जांच करवाते रहें। वहीं, अगर आप मीनोपॉज़ के आसपास हैं, तो आपके फाइब्रॉइड सिकुड़ने लगते हैं। इसके अलावा, अगर आपमें फाइब्रॉइड के लक्षण नजर आते हैं, तो उनका इलाज बीमारी की स्थिति के अनुसार किया जाता है।

गर्भाशय फाइब्रॉएड-होम्योपैथिक दवाएं आपको सर्जरी से बचा सकती हैं-

गर्भाशय फाइब्रॉएड गर्भाशय में उत्पन्न होने वाली सामान्य सौम्य, गैर-कैंसरयुक्त वृद्धि है। गर्भाशय फाइब्रॉएड प्रसव उम्र की महिलाओं को सबसे अधिक प्रभावित करता है। एक या एकाधिक फाइब्रॉएड प्रकट हो सकते हैं। स्थान हर मामले में अलग-अलग हो सकता है।

फाइब्रॉएड का होम्योपैथिक उपचार

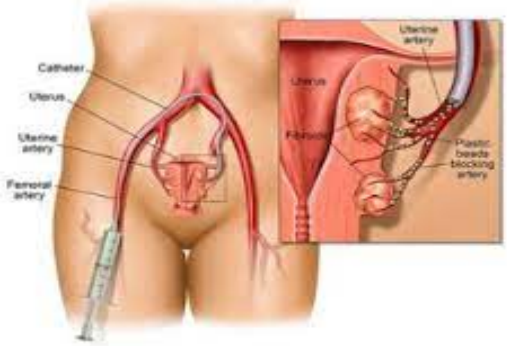

गर्भाशय फाइब्रॉएड का होम्योपैथिक उपचार बहुत प्रभावी हो सकता है और इसकी अत्यधिक अनुशंसा की जाती है, अक्सर एकमात्र उपचार की आवश्यकता होती है, खासकर जब फाइब्रॉएड छोटे से मध्यम आकार के होते हैं तो जल्दी इलाज किया जाता है।

गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए होम्योपैथिक दवाएं

थ्लास्पी बर्सा पास्टोरिस, कैल्केरिया कार्ब, बेलाडोना, सीपिया ऑफिसिनैलिस, उस्टिलागो मेडीस, सबीना ऑफिसिनैलिस, ट्रिलियम पेंडुलम,

काली कार्बोनिकम, एरीगरोन कैनाडेंसिस और चाइना ऑफिसिनैलिस और फेरम मेट गर्भाशय फाइब्रॉएड के उपचार में उपयोग की जाने वाली शीर्ष दवाएं हैं।

1. चाइना ऑफिसिनैलिस और फेरम मेट: भारी रक्तस्राव और एनीमिया के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए

चाइना ऑफिसिनैलिस और फेरम मेट दोनों ही भारी रक्तस्राव और एनीमिया के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के इलाज के लिए प्रभावी दवाएं हैं। उनमें से, चाइना ऑफिसिनैलिस सबसे अच्छा काम करता है जब मासिक धर्म में अत्यधिक, गहरे रक्तस्राव, मासिक धर्म के रक्त में थक्के, थकावट और एनीमिया होता है।

बेहोशी के दौरे भी आ सकते हैं। फेरम मेट का उपयोग सबसे अच्छा किया जाता है जहां लक्षणों में पीला, पानीदार, भारी और लंबे समय तक मासिक धर्म शामिल होता है जिससे एनीमिया होता है। जरा सी हलचल से

मासिक धर्म का प्रवाह बिगड़ जाता है। मासिक धर्म के दौरान पीठ के निचले हिस्से में दर्द या पेट में दर्द देखा जा सकता है।

2. थ्लास्पी बर्सा पास्टोरिस: लंबे समय तक मासिक धर्म के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए

थ्लास्पी बर्सा लंबे समय तक मासिक धर्म के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के इलाज के लिए शीर्ष श्रेणी की दवाओं में से एक है। मासिक धर्म 10-15 दिनों तक जारी रहता है। मासिक धर्म भी बहुत जल्दी-जल्दी आता है। अगला मासिक धर्म चक्र मासिक धर्म से ठीक होने से पहले ही प्रकट हो जाता है। बड़े थक्कों की उपस्थिति के साथ, मासिक धर्म में रक्तस्राव प्रचुर मात्रा में होता है।

मासिक धर्म के दौरान तीव्र गर्भाशय शूल भी उत्पन्न हो सकता है। गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामलों में मासिक धर्म के दौरान गर्भाशय में ऐंठन दर्द भी थ्लास्पी बर्सा पास्टोरिस के उपयोग का सुझाव देता है।

3. एरीगरोन कैनाडेंसिस: गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामले में बार-बार पेशाब आने के लिए

गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामले में बार-बार पेशाब आने के इलाज के लिए एरीगेरॉन कैनाडेंसिस एक फायदेमंद दवा है। कुछ मामलों में, पेशाब करने में दर्द भी हो सकता है। इसमें शामिल लक्षण अत्यधिक मासिक धर्म रक्तस्राव है जो चमकीले लाल रंग का होता है। एरीगेरॉन कैनाडेंसिस का उपयोग थोड़े से परिश्रम से अंतर-मासिक रक्तस्राव के लिए भी किया जाता है।

4. कैल्केरिया कार्ब: गर्भाशय फाइब्रॉएड से भारी मासिक धर्म के लिए

गर्भाशय फाइब्रॉएड से भारी मासिक धर्म के इलाज के लिए कैल्केरिया कार्ब एक बहुत उपयोगी दवा है। मासिक धर्म लंबे समय तक जारी रहता है

और समय से पहले भी आ सकता है। मासिक धर्म के दौरान चक्कर आ सकता है। गाढ़े, दूधिया या पीले रंग का ल्यूकोरिया एक और शिकायत है जो इसमें शामिल हो सकती है।

5. एरीगरोन कैनाडेंसिस: गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामले में बार-बार पेशाब आने के लिए

गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामले में बार-बार पेशाब आने के इलाज के लिए एरीगेरॉन कैनाडेंसिस एक फायदेमंद दवा है। कुछ मामलों में, पेशाब करने में दर्द भी हो सकता है। इसमें शामिल लक्षण अत्यधिक मासिक धर्म रक्तस्राव है जो चमकीले लाल रंग का होता है। एरीगेरॉन कैनाडेंसिस का उपयोग थोड़े से परिश्रम से अंतर-मासिक रक्तस्राव के लिए भी किया जाता है।

6. बेलाडोना और सीपिया ऑफिसिनालिस - गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए जहां मासिक धर्म दर्दनाक होता है

बेलाडोना और सीपिया ऑफिसिनैलिस गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए अच्छी तरह से संकेतित दवाएं हैं जहां मासिक धर्म दर्दनाक होता है। बेलाडोना सबसे अच्छी तरह से निर्धारित की जाती है जहां मासिक धर्म के दौरान गर्भाशय में ऐंठन दर्द होता है, मासिक धर्म चमकदार लाल रंग का और प्रचुर मात्रा में होता है। मासिक धर्म के दौरान जकड़न, जलन या दर्द के मामले में सीपिया ऑफिसिनैलिस के उपयोग की सिफारिश की जाती है।

मासिक धर्म जल्दी शुरू होता है और काफी प्रचुर मात्रा में होता है। मासिक धर्म के दौरान बेहोशी और ठंड लगना शामिल हो सकता है। सेपिया ऑफिसिनालिस को गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामलों में दर्दनाक संभोग के इलाज के लिए भी संकेत दिया जाता है।

7. यूस्टिलैगो मेडीस: गहरे मासिक धर्म रक्तस्राव के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए

यूस्टिलैगो मेडीस गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए एक अत्यधिक उपयुक्त दवा है जहां मासिक धर्म में रक्तस्राव गहरा होता है। मासिक धर्म के रक्त में थक्के भी मौजूद हो सकते हैं। गर्भाशय रक्तस्राव प्रकृति में कठोर हो सकता है।

8. ट्रिलियम पेंडुलम और काली कार्बोनिकम: मासिक धर्म के दौरान पीठ दर्द के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए

मासिक धर्म चक्र के दौरान पीठ दर्द के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामलों में, ट्रिलियम पेंडुलम की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। मासिक धर्म के दौरान दर्द पीठ से कूल्हों तक फैल सकता है। पीठ और कूल्हों को टाइट बांधने से राहत मिलती है। मासिक धर्म में रक्तस्राव चमकीला लाल और तेज होता है। जरा सी हलचल से गर्भाशय रक्तस्राव बिगड़ जाता है।

ट्रिलियम पेंडुलम को हर दो सप्ताह में अंतर-मासिक रक्तस्राव के लिए भी संकेत दिया जाता है। एक अन्य उपस्थित लक्षण गर्भाशय रक्तस्राव से बेहोशी है। मासिक धर्म के दौरान पीठ में तेज़ दर्द होने पर काली कार्बा◌ेनिकम का चयन किया जाता है। बैठने और दबाव डालने से दर्द ठीक हो जाता है। मासिक स्राव भी प्रचुर मात्रा में होता है।

9. सबीना ऑफिसिनैलिस - गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए जहां मासिक धर्म के रक्त के साथ थक्के निकलते हैं

गर्भाशय फाइब्रॉएड के मामलों में थक्के के साथ मासिक धर्म में रक्तस्राव के मामले में, सबीना ऑफिसिनैलिस एक महत्वपूर्ण दवा है। जरा सी हलचल से मासिक धर्म में रक्तस्राव बढ़ जाता है। त्रिकास्थि से प्यूबिस

तक दर्द एक अन्य लक्षण है। मासिक धर्म के दौरान गर्भाशय में दर्द हो सकता है जो पीठ के बल लेटने से ठीक हो जाता है। गर्भाशय का दर्द जांघों तक बढ़ सकता है। अन्य लक्षणों में गंदा, तीखा, संक्षारक, पीला प्रदर शामिल है।

10. फ्रैक्सिनस अमेरिकाना - कम संवेदना के साथ गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए उत्कृष्ट होम्योपैथिक दवा

फ्रैक्सिनस अमेरिकाना गर्भाशय फाइब्रॉएड के लिए एक शीर्ष श्रेणी की दवा है जिसकी सिफारिश ज्यादातर तब की जाती है जब प्रमुख संकेत विशेषता गर्भाशय फाइब्रॉएड से श्रोणि में दर्द की अनुभूति होती है।

Homeopathic Treatment for Uterine Fibroid

दवाई का नाम	लक्षण
पल्सेटिला नाइग्रा-30	पीड़ित महिला को यूटिराईन फाइब्रॉएड के साथ समय-पूर्व मासिक चक्र का होना, प्लसेटिला के मरीज को प्यास बहुत कम लगती है, इसका मरीज मृदुभाषी होता है अर्थात वह बाते बहुत अच्छी करता है। इसके मरीज को ताीज हवा और लोगों के बीच रहना पसन्द होता है और साँत्वना देने से

	उसे अच्छा लगता है और आराम भी मिलता है। 10-10 **गोली दिन में तीन बार मरीज को दें।**
कैल्केरिया फ्लोर-6 एक्स	**कैल्केरिया फ्लोर सभी प्रकार के फाइब्रॉएड के उपचार के लिए सबसे प्रभावी होम्योपैथिक दवाओं में है और इसे सभी तरह के फाइब्राएड के इलाज में प्रयोग किया जाता है। यह दवा फाइब्रॉइड को गलाकर बाहर निकाल देती है। अतः महिला के जेनेटिक शरीर में किसी भी तरह के फाइब्रॉइड को निकालने के लिए इसे प्रमुखता से उपयोग करना चाहिए।** 4-4 **गोली गोली थोड़े से गुनगुने पानी में घोलकर दिन में चार बार प्रयोग करना उचित होता है।**
काली आयोड-30	**महिला के यूटर्स में बहुत बड़ी गाँठ, पेट के निचले भाग में भारीपन, पैर ठण्ड़े और शरीर में कम्पन आदि लक्षणों के दिखाई देने पर इस दवा का प्रयोग किया जाता है। यह दवा पेट का भारीपन, पैरों का ठण्ड़ापन और शरीर में कम्पन्न को ठीक कर गाँठ को भी बाहर कर देती है। इस दवा का उपयोग महिला के प्राइवेट पार्ट में स्थित एक बटन जैसी रचना, जिसे हाथ की मिडिल फिंगर से छूकर महसूस किया जा सकता है, की गहराई के अनुसार ही इस दवा का प्रयोग करना चाहिए।**
काली कार्ब-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के कारण उसके पैरों में बहुत दर्द रहता है तो इस दवा का प्रयोग करना चाहिए। इस दवा की** 10-10 **गोली दिन में तीन बार मरीज को देनी चाहिए।**
क्रियोजोटम-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ बदबुदार ल्यूकोरिया या व्हाईट डिस्चार्ज हो तो क्रियोजोट नामक दवाई गर्भाश्य में रसौली को ठीक करने के साथ ही उसको ल्यूकोरिया से भी आराम देती है।**

एल्यूमिना-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही कब्ज भी रहता है तो एल्यूमिना नामक होम्योपैथिक दवा का प्रयोग करना चाहिए।**
लैकेसिस-1 एम	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही उसके पीरियड्स के दौरान ब्लयू कलर के क्लॉट्स आते हों तो लैकेसिस नामक होम्योपैथिक दवाई की** 15-15 **मिनट के अन्तर से तीन खुराक** (4-4 **बून्द**) **प्रति सप्ताह के हिसाब से देनी चाहिए। लैकेसिस का मरीज बहुत बातूनी, दुःखी होता है और उसकी परेशानियाँ रात के समय बढ़ती हैं।**
कोपानिया-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही वह अपना पेशाब रोक पाने में असमर्थ हो तो कोपानिया नामक होम्योपैथिक दवाई की** 10-10 **गोली दिन में तीन खुराक हिसाब से देनी चाहिए।**
ट्रिलियम पेन्डुलम-30	**जब पीड़ित महिला, गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही वह अपनी बच्चेदानी में भारीपन होने के साथ वह बच्चेदानी के बाहर आने को महसूस करती है, तो इस दवाई का प्रयोग उसे लाभ प्रदान करता है।**
औरम आर्स-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही उसकी सैक्सुअल डिजायर्स काफी बढ़ जाती हैं। तो इस दवा का प्रयोग करने से उसकी रसौली ठीक होकर उसकी बढ़ी हुई सैक्सुअल डिजायर्स पर भी कंट्रोल होता है।**
लेपिस एल्बा-30	**जब पीड़ित महिला को गर्भाश्य में रसौली होने के साथ ही उसे पीरियड्स के दौरान तेज दर्द के साथ ही अधिक मात्रा में रक्तस्राव होता है, तो इस दवा का प्रयोग** 10-10 **गोली दिन में तीन बार करना चाहिए।**

लेखक: मुकेश शर्मा होम्योपैथी के एक अच्छे जानकार हैं जो पिछले लगभग 25 वर्षों से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हे। होम्योपैथी के उपचार के दौरान रोग के कारणों को दूर कर रोगी को ठीक किया जाता है। इसलिए होम्योपैथी में प्रत्येक रोगी की दवाए दवा की पोटेंसी तथा उसकी डोज आदि का निर्धारण रोगी की शारीरिक और उसकी मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना किसी होम्योपैथी के एक्सपर्ट की सलाह के बिना किसी भी दवा सेवन कदापि न करें।

डिसक्लेमरः प्रस्तुत लेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के अपने हैं।